REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

फूलों का विश्वव्यापी बाजारः एक संक्षिप्त अवलोकन

सतीश कुमार पासवान
शोधार्थी
विषय :– वाणिज्य
वाणिज्य एवं व्यवसाय प्रशासन विभाग,
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा.

सार

व्यवसायिक नीतियों के उदारीकरण ने फूलों के निर्यातोन्मुख उत्पादन के विकास का मार्ग प्रशस्त किया है। भारत सरकार ने फूल की खेती को एक उभरते हुये महती उद्योग के रूप में अभिनिर्धारण किया है। फूलों की बढ़ती माँग के परिणाम स्वरूप पुष्पकृषि एक महत्त्वपूर्ण वाणिज्यिक व्यापार बन गया है। पिछले अध्याय में अध्ययन विषय का परिचय, उद्देश्य, महत्व, शोध–प्रणाली एवं कार्य योजना पर प्रकाश डाला गया है। वर्तमान अध्याय में हमने फूलों के विश्वव्यापी बाजार का विवरण प्रस्तुत किया है। भारत के अनेकों राज्य यथा तमिलनाडु, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, आदि से इत्तर विदेशों में भी फूलों तथा फूल उत्पाद का बड़ा बाजार है। संयुक्त राज्य अमेरिका, नीदर लैंड, जर्मनी, इंग्लैण्ड, कनाडा और जापान आदि देशों को भारत से पुष्प बड़े पैमाने पर विदेशी मुद्रा भारत को प्राप्त होता है। भारत सरकार ने फूलों की खेती को 100 प्रतिशत निर्यातोन्मुख उद्योग का दर्जा दिया है। भारत 160 से अधिक देशों में फूल का निर्यात करता है।

भारत सरकार ने पुष्पकृषि को एक उभरते हुए उद्योग के रूप में निर्धारण किया है और इसे 100 प्रतिशत निर्यातोन्मुख उद्योग का दर्जा दिया है। फूलों की बढ़ती हुई मांग को ध्यान में रखते हुए पुष्पकृषि एक महत्वपूर्ण वाणिज्यिक व्यापार बन गया है। अतः वाणिज्यिक पुष्पकृषि, ग्रीनहाउस में नियंत्रित जलवायु स्तिथियों के तहत होने वाला एक उच्च तकनीक के रूप में देखा जा सकता हैं। भारत में निर्यात के दृष्टिकोण से भी वाणिज्यिक पुष्पकृषि महत्वपूर्ण हो रही है। औद्योगिक और व्यापार नीतियों के उदारीकरण ने फूलों के निर्यातोन्मुख उत्पादन के विकास के लिए मार्ग प्रशस्त किया है। नयी बीज नीति ने पहले ही अंतर्राष्ट्रीय किस्मों के पौधे सामग्रियों के आयात को सुविधाजनक बना दिया हैं। यह देखा गया है कि व्यापारिक पुष्पकृषि में अन्य फसलों की अपेक्षा प्रति इकाई क्षेत्र में ज्यादा पैदावार देने की क्षमता है इसलिए यह एक बेहतर व्यापार है। निर्यात के प्रयोजनों के लिए भारतीय पुष्पकृषि उद्योग पारम्परिक पुष्पों की अपेक्षा खुले फूलों की ओर अग्रसर हुआ है। [1] नियंत्रित जलवायु परिस्थितियों के तहत निर्यातोन्मुख पुष्पकृषि इकाईयां स्थापित करने के लिए भारतीय उद्यमकर्ताओं को लचीली अर्थव्यवस्था के परिणामस्वरूप व्यापार में गति प्राप्त हुई है। भारत में कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा), फूलों की खेती के विकास के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए उत्तरदायी है। देश में महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, हरियाणा, तमिलनाडु, राजस्थान, पश्चिम बंगाल आदि प्रमुख पुष्पकृषि केंद्र के रूप में उभरे है।

भूमिका

भारत में पुष्प की खेती एक लंबे अरसे से होती रही है, लेकिन आर्थिक रूप से लाभदायक एक व्यवसाय के रूप में पुष्पों का उत्पादन पिछले कुछ सालों से ही प्रारंभ हुआ है। समकालिक पुष्प जैसे गुलाब, गेंदा, कमल, ग्लैडियोलस, रजनीगंधा, कार्नेशन आदि के बढ़ते उत्पादन के कारण गुलदस्ते और उपहारों के स्वरूप देने में इनका उपयोग काफी बढ़ा है। फूलों को मनुष्य के द्वारा सजावट और औषधि के लिए उपयोग में लाया जाता है। इसके अलावा घरों और कार्यालयों को सजाने में भी इनका उपयोग बहुतायत से किया जाता है। मध्यम वर्ग के जीवनस्तर में सुधार और आर्थिक संपन्नता ने पुष्प बाजार के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया और फूलों की खेती को एक विशाल बाजार का स्वरूप प्रदान किया है। भारत ने पिछले दशक में पुष्प उत्पादन में उल्लेखनीय प्रगति की है।

भारत में विभिन्न कृषि – जलवायु का क्षेत्र है जो नाजुक और कोमल फूलों की खेती के लिए अनुकूल है। उदारीकरण के पश्चात के दशक के दौड़ान पुष्पकृषि ने निर्यात के क्षेत्र में बड़ा कदम रखा है। विदेश व्यवसाय में वस्तुओं, सेवाओं ओर वितीय संसाधनों का अंतर्देशीय प्रवाह शामिल हैं। विदेश व्यापार द्वारा विदेशी पूंजी और विशेषज्ञों की मदद से देश में उपलब्ध संसाधनों का बेहतर इस्तेमाल होता है। यह व्यवसाय एक देश की विदेशी विनिमय प्राप्त करने की क्षमता प्रदान करता है। आयात और निर्यात अक्सर दुर्लभ या बहुतायत में प्राप्त वस्तु की कीमतों में भारी परिवर्तन (उतार–चढ़ाव) को कम करता है। व्यापार एक देश की उपभोग क्षमताओं का विस्तार करता है, और दुर्लभ संसाधनों तक पहुंच प्रदान करता है और उत्पाद के लिए विश्वभर के बाजार तक विस्तार देता है जो संवृद्धि एवं विकास को बढ़ाने में सहायक होती है।

विदेशी व्यापार

भारत के विश्व के भौगोलिक प्रदेशों और बड़े व्यापारिक समूहों के साथ व्यापारिक संबंध हैं जिसमें पश्चिमी यूरोप, पूर्वी यूरोप, पूर्ववर्ती सोवियम संघ (रूस) और बाल्टिक राज्य, एशिया, ओसीनिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका और लैटिन अमेरिका आते हैं। जबकि भारत की व्यापार संवृद्धि का विश्व व्यापार बढ़ोतरी के साथ एक मजबूत सह–संबंध है, यह विश्व व्यापार संवृद्धि की तुलना में ऊंचा रहा है। बढ़ती जनसंख्या की जरूरतों तथा प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़ इत्यादि के कारण घरेलू उत्पादन में आयी कमी को पुरा करने के लिए भी उपभोक्ता वस्तुओं जिसमें बड़ी मात्रा में फूल एवं इनके बने उत्पाद भी आयात किए गए।

कृषि और सम्बंधित उत्पाद जिसमें फूल तथा फूल उत्पाद हैं, भारत में विदशों से निर्यात किये जाते हैं।

सरकार की नीति

भारत सरकार के वाणिज्य मंत्रालय की आयात–निर्यात नीति के माध्यम से निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति की आशा की गई है –

- विश्व बाजार के विस्तार का लाभ उठाना एवं इसके लिए अर्थव्यवस्था में समुचित परिवर्तन लाना व उसे गत्यात्मकता प्रदान करना।
- उत्पादन वृद्धि के लिए आवश्यक कच्चे माल, व पूंजीगत वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित करना जिससे आर्थिक विकास की गति तीव्र हो सके।
- भारतीय कृषि, उद्योग व सेवा क्षेत्र की प्रतिस्पद्धी क्षमता में वृद्धि के लिए प्रौद्योगिकी में उन्नयन करना, रोजगार के नवीन अवसरों का सृजन करना एवं विश्वस्तरीय गुणवत्ता वाली वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन।
- उपभोक्ताओं को उच्च गुणवत्ता की वस्तुएं समुचित कीमतों पर उपलब्ध करवाना।

प्रविधि पर केंद्रीकरण के परिणामस्वरूप निर्यात दिशाओं का अधिक प्रादेशिक विस्तार होगा और प्रादेशिक संवृद्धि उतार–चढ़ाव के कारण उत्पन्न निर्यात चक्र का न्यूनीकरण करेगी।

भारत को नवोदित अर्थव्यवस्थाओं के अंतर्गत अपनी पहुंच द्वारा निर्यात बाजार का विविधीकरण करना चाहिए। उदाहरण के लिए, पूर्वी युरोप और मध्य एशिया की अर्थव्यवस्थाएं परिवर्तन के दौर में हैं। हमें इन पर ध्यान देना चाहिए और इन बाजारों में अपनी उपस्थिति दर्ज करनी चाहिए। विशेष तौर पर, कम से कम कुछ समय के लिए, ये बाजार विकसित देशों के बाजारों की तरह प्रतिस्पर्द्धात्मक नहीं होंगे। प्रतिशत वार्षिक वृद्धि के

साथ 2020 तक वस्तुओं एवं सेवाओं के निर्यातों को दोगुना करने का लक्ष्य है। नीति का दीर्घकालिक लक्ष्य 2020 तक वैश्विक व्यापार में भारत की हिस्सेदारी बढ़ाकर दोगुना करना है।

व्यापार नीति की विशेषताएं

1. फोकस बाजार योजना का विस्तारः

वैश्विक वित्तीय संकट के कारण मांग में गिरावट की समस्या के निदान के लिए इस नीति में फोकस बाजार योजना के अंतर्गत 26 नए बाजार शामिल किए गए हैं।

2. फोकस बाजार योजना एवं फोकस उत्पाद योजना से प्रेरणाएं :

फोकस बाजार योजना के अंतर्गत उपलब्ध प्रेरणाओं (या रियायतों) को 2–5 प्रतिशत से बढ़ाकर 8.0 प्रतिशत करना है। दिलचस्प बात यह है कि फूलों की गुणवत्ता फसल की कटाई तक बनी रहती है लेकिन खराब प्रबंधन की वजह से उसकी गुणवता पर असर पड़ता है। इसके अलावा गैर–वैज्ञानिक तरीके से फसलों को तैयार के तरीके जो कारोबारी अपनाते हैं उससे फूलों के उपयोग करने तक सही–सलामत बचने की गंजाइश कम होती है, जिससे पूरे कारोबार पर असर पड़ता है। इस बीच देश के फूलों की स्वीकार्यता भी पिछले कुछ सालों में बढ़ी है क्योंकि किसान खेती के बेहतर तरीके अपना रहे हैं। सरकार भी किसानों के पुष्प फसलों की गुणवत्ता में सुधार के लिए जागरूक हो रही है। 'भारतीय फूलों का भविष्य बेहद अच्छा है। यह तो अभी शुरूआत है और किसान अब वैश्विक रूझान वाली चीजों के बारे में ज्यादा जागरूक हो रहे हैं। ऐसे में फूलों की कटाई के बाद रखने और नई कोल्ड स्टोर सुविधाएं तैयार करने जैसी सुधार की काफी गुंजाइश दिखती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सिओल में घोषणा करते हुए कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था की बुनियादी चीजें पूरी तरह से मजबूत हैं। सही बात है, लेकिन भारत की अर्थव्यवस्था में कुछ परेशान करने वाले संकेतों की उपेक्षा करना भारत सरकार के लिए इस मौके पर सही कदम नहीं होगा। आज वैश्विक तौर पर अनेक अर्थव्यवस्थाएं दबाबों से जूझ रही हैं और भारत भी कुछ खास मामलों में समस्याओं का शिकार हो रहा है। ऐसा लग सकता है कि भारत 7 प्रतिशत की तुलनात्मक रूप से बढ़ी हुई वृद्धि दर के साथ धीमे लेकिन सधे हुए कदमों से बढ़ रही है लेकिन अगर अर्थव्यवस्था की कुछ बुनियादी चीजों को देखें तो तत्काल ध्यान देने की जरूरत है।

वैश्विक तौर पर, अमरीका की अर्थव्यवस्था नीचे आ रही है और सबसे खास बात यह है कि चीन भी अनियंत्रित मंदी के संकेत दिखा रहा है। इस मंदी के प्रभाव से कोई भी अछूता नहीं रहेगा, भारत भी नहीं, क्योंकि विश्व की अर्थव्यवस्था में उसका आकार और महत्व बहुत ज्यादा है। इस समय जर्मनी इटली और ब्रिटेन भी धीमी जीडीपी वृद्धि दर्शा रहे हैं।

भारत में, कृषि पर दबाव बना हुआ है क्योंकि मुद्रास्फीति चल रही है। इसके परिणामस्वरूप, किसानों की कमाई पहले से कम हो रही है। जैसा वादा किया गया था उस तरह से कमाई दुगुनी नहीं हुई है। किसान फूलों के उत्पादों के लिए मांग पैदा करते हैं और खेती से जुड़ी हुई जानकारी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

चुनौतियाँ

भारत कई निर्यात मदें में उच्च आयात प्रवृति रखती हैं जो उनके प्रतिस्पर्द्धात्मक लाभ में कमी करते हैं, विशेष रूप से तब जब रूपये की कीमत कमजोर होती है।

हस्तांतरण की उच्च लागत एक अन्य बड़ी समस्या है। यह निर्यात उद्योग के लाभ को कम कर देती है। एक और सम्बद्ध कारक है जो भारतीय फूलों निर्यात में रूकावट डालता है और वह है निर्यात अवसंरचना की खराब स्थिति।

फूलों का विश्वव्यापी बाजार

यह एक ऐसा क्षेत्र है, जहां सरकारी व निजी क्षेत्र के अलावा कृषक स्वयं का व्यवसाय कर अच्छा–खासा मुनाफा अर्जित किया जा सकता है। क्योंकि अन्य फसल व सब्जी की अपेक्षा इसमें अधिक मुनाफा है। इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि देश में प्रतिवर्ष 20 प्रतिशत के हिसाब से फूलों की खपत

बढ़ रही है। एक सर्वे के अनुसार फूलों के कारोबार से लगभग पूरे देश में सात लाख लोग आजीविका चला रहे हैं। पूरे देश में फूलों की मांग के हिसाब से आपूर्ति महज केवल 60 प्रतिशत ही हो पाती है। इस हिसाब से देखा जाए, तो एक्सपोर्ट के कारोबार में फूलों हेतु अच्छा अवसर है।

लचीली उद्योगिक व व्यापार नीतियों ने भारत में फूलों के निर्यातोन्मुख उत्पादन के विकास के लिए मार्ग प्रशस्त किया है। नयी बीज नीति ने पहले ही अंतर्राष्ट्रीय किस्मों के पौधे, सामग्रियों के आयात को सुविधाजनक बना दिया हैं। यह देखा गया है कि व्यापारिक पुष्पकृषि में अन्य फसलों की अपेक्षा प्रति इकाई क्षेत्र में ज्यादा पैदावार देने की क्षमता है इसलिए यह एक बेहतर व्यापार है। निर्यात के प्रयोजनों के लिए भारतीय पुष्पकृषि उद्योग पारम्परिक पुष्पों की अपेक्षा खुले फूलों की ओर अग्रसर हुआ हैं।

प्रमुख निर्यात लक्ष्य (2018–19) : सयुंक्त राज्य अमेरिका, नीदरलैंड, जर्मनी, यू के, कनाडा और जापान इसी अवधि के दौरान भारतीय फूलों की खेती (पुष्पकृषि) में प्रमुख आयातक देश रहे।

कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा), भारत में फूलों की खेती के विकास के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए उत्तरदायी है। साथ गतिशील बदलाव देखा गया है। वर्ष 2017–18 के दौरान, राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीय पुष्पकृषि डेटाबेस 2017 के अनुसार भारत में फूलों की खेती के लिए 432.74 हजार हेक्टयर क्षेत्र था जिसमें से शिथिल फूलों की खेती कई राज्यों में व्यावसायिक रूप से की जा रही है और मध्य प्रदेश, गुजराता, पंजाब, हरियाणा, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, झारखंड, उत्तर प्रदेश और छत्तीसगढ़ को पीछे छोड़ते हुए पश्चिम बंगाल 32 प्रतिशत, कर्नाटक 12 प्रतिशत, महाराष्ट्र 10 प्रतिशत, राज्यों में फूलों की खेती की हिस्सेदारी बढ़ गई है।

भारतीय फूल उद्योग में गुलाब, रजनीगंधा, ग्लेड्स, एंथुरियम, कार्नेशन, गेंदा आदि फूल शामिल है। फूलों की खेती अत्याधिक पाली और ग्रीनहाउस दोनों में की जाती है। भारत में वर्ष 2017–18 में फूलों का कुल निर्यात 656.90 करोड़ रूपये का रहा। प्रमुख आयातक देश संयुक्त राज्य अमेरिका, नीदरलैंड, जर्मनी, ब्रिटेन, संयुक्त अरब अमीरात, जापान और कनाडा थे। भारत में 500 से अधिक निर्यातोन्मुख इकाईयाँ है। फूलों की 50 प्रतिशत से अधिक इकाईयाँ कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडू में है। विदेशी कम्पनियों से तकनिकी सहयोग के साथ भारतीय पुष्पकृषि उद्योग विश्व व्यापार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने की और अग्रसर है। भारत में वर्ष 2017–18 के दौरान लगभग 432.74 हजार हेक्टयेर क्षेत्र पुष्पकृषि के तहत किया गया। अनुमानित पुष्प उत्पादन वर्ष 2017–18 के दौरान 2.829 मिलियन टन खुले फूल और 176.73 मिलियन टन कट फ्लावर से हुआ।

व्यावहारिक विविधीकरण की दृष्टि से पुष्पों की खेती का महत्व दिनों–दिन बढ़ता जा रहा है। यद्यपि पुष्पों को उगाने की कला भारत के लिए नई नहीं है तथापि, बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक स्तर पर इनकी खेती तथा पॉली हाउसों में इनकी संरक्षित खेती भारत में अपेक्षाकृत नई है। विपुल आनुवंशिक विविधता, विभिन्न प्रकार की कृषि जलवायु संबंधी परिस्थितियों बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न मानव संसाधन के कारण भारत में इस क्षेत्र में विविधीकरण के नए मार्ग प्रशस्त हैं जिनका अभी तक पर्याप्त रूप से दोहन नहीं हुआ है। विश्व व्यापार संगठन के युग में विश्व बाजार के खुल जाने के कारण पुष्पों तथा पुष्पोत्पादों का विश्व भर में स्वतंत्र रूप से आवागमन संभव है।

इस संदर्भ में प्रत्येक देश को प्रत्येक देश की सीमा में व्यापार करने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध हैं। विश्व स्तर पर 160 से अधिक देश पुष्पों की फसलों की खेती में लगे हुए हैं। विभिन्न देशों में संयुक्त राज्य अमेरिका पुष्पों का सबसे बड़ा उपभोक्ता है। जहां प्रति वर्ष 10 बिलियन डॉलर से अधिक के पुष्पों की खपत होती है।

इसके बाद उपभोग के मामले में जापान का स्थान है जहां प्रति वर्ष 7 बिलियन डॉलर से अधिक मूल्य के पुष्पों की खपत होती है। भारत का भविष्य में बेहतर स्कोप है क्योंकि उष्णकटिबंधीय पुष्पों की ओर लोगों का रूझान बढ़ रहा है और भारत जैसे देश द्वारा इसका लाभ उठाया जा सकता है क्योंकि हमारे यहां देशी वनस्पति जगत में उच्च स्तर की विविधता उपलब्ध है। पुष्प हमारे देश के समाज में गहराई से जुड़े हुए हैं और इनके बिना कोई भी सहारोह पूर्ण नहीं होता है। हमारा घरेलू उद्योग प्रतिवर्ष 7–10 प्रतिशत वार्षिक की दर से बढ़ रहा है। भारत फल और सब्जी के बीचों का भी निर्यात करते है और वर्ष 2017–18 के दौरान 540.53 करोड़ रूपए का निर्यात किया गया। पाकिस्तान, संयुक्त राज्य अमेरिका, बांग्लादेश, नीदरलैंड, इटली, और थाईलैंउ देश भारत के फल और सब्जी बीज के मुख्य बाजार रहे। भारत दुनिया के लगभग 160 देशों से ज्यादा को देश का पहला

फार्म पटियाला (पंजाब) में बना। पंजाब में इस समय 2500 एकड़ में फूल की खेती होती है और यहाँ से हॉलैण्ड, पोलैंड और जर्मनी को फूल, निर्यात किये जाते हैं।

भारत सरकार ने पुष्पकृषि का एक उभरते हुए उद्योग के रूप में अभिनिर्धारण किया है और इसे 100 प्रतिशत निर्यातोन्मुख उद्योग का दर्जा दिया है। फूलों की बढ़ती हुई मांग को ध्यान में रखते हुए पुष्पकृषि क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण वाणिज्यिक पुष्पकृषि व्यापार बन गया है। अतः वाणिज्यिक पुष्पकृषि क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण वाणिज्यिक पुष्पकृषि व्यापार बन गया है। अतः वाणिज्यिक पुष्पकृषि ग्रीनहाउस में नियंत्रित जलवायु स्थितियों के तहत होने वाला एक उच्च तकनीक के रूप में देखा जा रहा है। निर्यात के द्रष्टिकोण से भी वाणिज्यिक पुष्पकृषि महत्त्वपूर्ण हो रही है। फूलों की खेती कई राज्यों में व्यावसायिक रूप से की जा रही है और मध्य प्रदेश, गुजरात, पंजाब, हरियाणा, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, झारखंड, उत्तर प्रदेश और छत्तीसगढ़ को पीछे छोड़ते हुए पश्चिम बंगाल 32 प्रतिशत, कर्नाटक 12 प्रतिशत, महाराष्ट्र 10 प्रतिशत, राज्यों में फूलों की खेती की हिस्सेदारी बढ़ गई है। भारतीय फूल उद्योग में गुलाब, रजनीगंधा, ग्लेड्स, एंथुरियम, कार्नेशन, गेंदा आदि फूल शामिल है। फूलों की खेती अत्याधिक पाली और ग्रीनहाउस दोनों में की जाती है।

भारत में वर्ष 2015–16 में फूलों का कुल निर्यात 455.90 करोड़ रूपए का रहा। प्रमुख आयातक देश संयुक्त राज्य अमेरिका, नीदरलैंड, जर्मनी, ब्रिटेन, संयुक्त अरब अमीरात, जापान और कनाडा थे। भारत में 300 से अधिक निर्यातोन्मुख इकाईयाँ है। फूलों की 50 प्रतिशत से अधिक इकाईयाँ कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडू में है। विदेशी कम्पनियों से तकनिकी सहयोग के साथ भारतीय पुष्पकृषि उद्योग विश्व व्यापार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने की और अग्रसर है।

पुष्प उत्पाद : निर्यात मूल्य रू० – लाख

Country	2016-17		2017-18		2018-19	
	Qty	Value	Qty	Value	Qty	Value
अमेरिका	3,762.70	9,902.23	3,489.02	10,497.73	4,038.07	14,692.43
नीदरलैंड	1,809.32	5750.38	1,855.00	6,563.30	1,518.92	7,789.14
इंगलैंड	2,457.84	6,838.96	2,116.98	5.320.13	1,530.01	4,470.63
जर्मनी	2,439.66	6,241.66	1,347.90	3,667.89	1,251.71	3,938.55
अरब अमीरात	1,438.84	3,449.30	1,211.45	2,929.65	1,871.24	3,434.08
कनाडा	748.52	1,792.93	1,133.35	2,127.90	878.99	2,341.81
अस्ट्रेलिया	250.07	1,306.72	198.74	1,312.95	250.53	1,607.44
इटली	555.10	1,609.93	522.49	1,661.09	403.24	1,578.90
जापान	365.05	1,479.33	284.04	1,360.83	310.37	1,574.58
मलेशिया	520.82	1,202.27	793.46	1,325.61	862.00	1,539.92
सिंगापुर	1,347.01	1,654.38	1,956.81	1,545.90	1,998.34	1,478.01
स्पेन	186.31	660.82	250.41	1,032.57	304.39	1,126.38
पोलैंड	328.56	902.71	342.18	781.84	335.18	1,065.80
बेल्जीयम	297.79	655.87	219.52	572.78	400.76	794.44
न्यूजीलैंड	151.93	527.85	265.90	854.59	197.29	792.99
फ्रांस	227.33	559.45	265.77	375.32	186.74	588.50
मालद्वीप	186.62	375.38	210.32	354.44	364.97	577.90
ऑस्ट्रेलिया	171.27	405.70	125.71	343.48	154.74	529.33
कुवैत	156.15	312.60	146.36	356.11	258.57	519.57
साउदी अरब	528.75	751.89	378.94	590.04	258.18	414.11
लेवनान	99.46	425.90	85.60	328.55	80.12	343.08

चाइना	495.45	1,267.18	266.78	681.64	117.61	320.36
कटर	152.62	570.31	103.74	200.45	155.97	311.55
हंग्री	267.47	285.53	190.94	269.62	161.26	285.75
ग्रीस	227.26	507.92	207.27	479.40	94.53	262.77
कोरीया	51.80	282.40	67.81	266.74	39.49	72.56
ओमान	301.09	194.17	292.04	241.95	91.75	35.23

स्त्रोत : www.agriexchange.apeda.gov.in

पुष्पकृषि उत्पादों में मुख्यतया खुले पुष्प, पॉट प्लांट, कट फोइलेज, सीड्स बल्बस, कंद, रूटेड़ कटिंग्स और सुखे फूल व पत्तियां सम्मिलित हैं। प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय पुष्पकृषि में खुले गुलाब के फूलों का व्यापार, लाली, गुलदाउदी, गारगेरा, ग्लेडियोलस, जाइसोफिला, लायास्ट्रिस, नेरिन, आर्किड, अर्किलिया, अन्थुरियम, ट्युलिप और लिलि है। गारब्रेरास, गुलनार आदि फूलों की खेती ग्रीन हाउस (हरित गृह) में की जाती है। खुले खेतों में उगाई जाने वाली फसल गुलदाउदी, गुलाब, गेल्लारड़िया, लिलि, मेरीगोल्ड, तारा, कंदाकार प्रमुख है, जो विदेशों में बेचे जाते हैं।

फूलों में रैनन क्लाउज, स्वीट, विलियम, डेहलिया, लुपिन, वेरबना, कासमांस आदि के फूल लगा सकते हैं। इसके अलावा गुलाब की प्रजातियों में चाइना मैन, मेट्रोकोनिया फर्स्ट प्राइज, आइसबर्ग और ओक्लाहोमा जैसी नई विविधताएं हैं, जो शर्तिया कमाई देती हैं। इसके साथ–साथ मोगरा, रात की रानी, मोतिया, जूही आदि झाडियों के अलावा साइप्रस चाइना के निर्यात से भी देश को अच्छी आय होती है।

महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, हरियाणा, तमिलनाडू, राजस्थान, पश्चिम बंगाल आदि प्रमुख पुष्पकृषि केंद्र के रूप में भारत में उभरे है, जहाँ से कई देशों में फूलों का निर्यात किया जाता है। जरबेरा की खेती विश्व में नीदरलैंड, इटली, पोलैण्ड, इजरायल और कोलम्बिया में की जा रही है। भारत में इसकी खेती व्यवसायिक स्तर पर घरेलू बाजार में बेचने हेतु की जा रही है। घरेलू पुष्प बाजारों में जरबेरा कट फ्लावर की मांग दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इसके प्रजातियों को सिंगल, सेमी डब्बल और डबल वर्गों में विभाजित किया गया है।

सारांश

भारत में फूलों का उत्पादन बहुत लंबे अरसे से होती आ रही है, परन्तु आर्थिक रूप से लाभप्रद एक व्यवसाय के रूप में फूलों का उत्पादन बीते कुछ वर्षो से ही प्रारंभ हुआ है। समकालिन फूल गुलाब, गेंदा, रजनीगंधा, सूर्यमुखी आदि के बढ़ते उत्पादनों ने फूल को व्यापार का रूप दे दिया हैं। जीवन स्तर में सुधार और आर्थिक संपन्नता ने फूलों के बाजार के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया और पुष्पकृषि को एक विशाल बाजार का स्वरूप प्रदान किया है। देश का कई स्थान जैसे दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई, लखनऊ, गोरखपुर, अहमदावाद, भोपाल, फूलों के बड़े बाजार के रूप में उभरे हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका, नीदरलैंड, जर्मनी, इंग्लैण्ड, कनाडा, जापान भारत के फूल की खेती के मुख्य आयातक देश रहे हैं।

व्यापारिक पुष्पकृषि में अन्य फसलों की अपेक्षा प्रति इकाई क्षेत्र में ज्यादा पैदावार देने की क्षमता है इसलिए फूल व्यवसाय एक बेहतर व्यापार है। फूलों के व्यवसाय से लगभग साल लाख लोग अपनी आजिविका चला रहें हैं, निर्यात के करोबार में फूलों हेतु अच्छा अवसर है।

संदर्भ :

1. सिंह गोरख (2011) फ्लोरीकल्चर डेवलोपमेंट इन नॉर्थ ईस्ट एण्ड हिमालयन स्टेट, डिर्पाटमेंट ऑफ एग्रिकल्चर एण्ड कोपरेशन, मिनिस्टिरी ऑफ एग्रिकल्चर, नई दिल्ली। पृष्ठ – 416–418
2. राव, के० आर० (2008), फ्लोरीकल्चर वूम इन इंडिया, क्रोनिका हॉर्टिकल्चर, ए० पब्लिकेशन ऑफ द इंटरनेशनल सोसाईटी फोर हॉर्टिकल्चर साईसं, 40,2
3. बनर्जी दिपंकर, (2013), फ्लोरीकल्चर मार्केट इन इंण्डिया, स्नेहा प्रिंटिगस, उनैन पृ० – 209–212
4. गुप्ता, वाई (2010) फ्लोरीकल्चर डेवलोपमेंट इन हिमाचल प्रदेश, विधानमाला, IX. No-1

5. पुरोहित हरीश (1998), फ्लोरीकल्चर इन इंडियन कल्चर, सुमेघा पब्लिकेशन, रायपुर पृष्ठ – 144–152
6. फ्लोरीकल्चर मार्केट इन इंण्डिया (2010) – नेट (इंण्डिया) प्रा० लि०।
7. राजा, एस. से (1974) पुष्पवाटिका एक अध्ययन, अंकित प्रिंटिग प्रेस, बंगलौर पृष्ठ – 112–116
8. www.apeda.gov.in
9. बनर्जी, एस, पी (2008) फूल फसलों की खेती और प्रबंधन, हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय प्रेस, पालयपुर, पृष्ठ सं० – 312–319
10. तिवारी, ए०, (2011) पुष्पोत्पादनः विकास की असीम संभावनाएं योजनाः 40, अंक – 1 अप्रैल
11. जिन्दल, एस, के – (2010) पुष्प कृषि, केन्द्रीय अनुसंधान प्रेस, जोधपुर पृष्ठ संख्या – 213–216
12. www.floriculture.in
13. कौल, जी० एल, (1995), प्रोस्पेक्ट ऑफ फ्लोरीकल्चर इन इंण्डिया, डिर्पाटमेंट ऑफ एग्रिकल्चर एण्ड कोपरेशन, मिनिस्टिरी ऑफ एग्रिकल्चर, भारत सरकार